

डॉ. रोजर ग्रीन, रिफॉर्मेशन टू द प्रेजेंट, व्याख्यान 6, केल्विन का धर्मशास्त्र

© 2024 रोजर ग्रीन और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. रोजर ग्रीन अपने चर्च इतिहास पाठ्यक्रम, रिफॉर्मेशन टू द प्रेजेंट में हैं। यह केल्विन के धर्मशास्त्र पर सत्र 6 है।

तो, हम आगे की यात्रा करेंगे। आइए प्रार्थना करें, और फिर हम शुरू करेंगे।

हमारे दयालु प्रभु, हम फिर से रुकते हैं, एक और सप्ताह की शुरुआत, और हम इसके लिए आभारी हैं, और हम एक-दूसरे के लिए अच्छे शिक्षक होने, एक-दूसरे से सीखने, और इस सामग्री को समझने और इसे अपने दिलों और जीवन में लागू करने और उस तरह से काम करने की कोशिश करने के लिए आभारी हैं। हम उन लोगों को धन्यवाद देते हैं जो आपके प्रति, शास्त्रों के प्रति, आपके चर्च के प्रति, यहाँ पृथ्वी पर मसीह के शरीर के प्रति वफादार हैं; हम उनके लिए आभारी हैं।

जॉन कैल्विन जैसे लोग ही वे लोग हैं जिनके बारे में हम अभी बात कर रहे हैं। और इसलिए हम प्रार्थना करते हैं कि आप न केवल इस कक्षा में इन चर्चाओं में बल्कि आज और पूरे सप्ताह हमारी सभी कक्षाओं में और गॉर्डन में होने वाली सभी घटनाओं में हमारे साथ रहें और इससे मसीह का शरीर मजबूत होगा, बल्कि हम भी अपने सीखने, एक-दूसरे के साथ हमारी संगति, हमारे सामुदायिक जीवन के लिए व्यक्तिगत रूप से मजबूत होंगे, ताकि आप उस तरह के विकास, उस तरह की परिपक्वता में हमारी सहायता करें। इसलिए, इस सप्ताह की शुरुआत के लिए हमारे दिलों में धन्यवाद के साथ, हम आपको धन्यवाद देते हैं, और हम ये बातें हमारे प्रभु मसीह के नाम पर प्रार्थना करते हैं। आमीन।

ठीक है, उम्मीद है कि आपका सप्ताह अच्छा रहा होगा, और हम ठीक उसी तरह हैं जहाँ हमें यहाँ होना चाहिए। यह व्याख्यान दो है, जॉन कैल्विन का धर्मशास्त्र।

तो, हमने केल्विन के जीवन के बारे में बात की, और फिर हमने उनके काम के बारे में बात की। हमने इस बारे में बात की कि उनके काम में क्या महत्वपूर्ण था, और फिर हमने उनके धर्मशास्त्र के बारे में बात की। तो, बस एक तरह से याद दिलाने के लिए, क्योंकि हम कुछ दिनों से एक साथ नहीं हैं, लेकिन बस एक याद दिलाने के लिए, हमने उनके धर्मशास्त्र के बारे में काफी लंबा परिचय दिया, और विशेष रूप से यहाँ महत्वपूर्ण बात यह है कि संस्थानों के बारे में ध्यान दें और संस्थान क्यों, उन्होंने कैसे आकार और रूप लिया, लेकिन यह भी कि उन्हें क्या जानकारी थी और उन्होंने संस्थानों को कैसे आकार दिया और इसी तरह।

तो, हमने इस बारे में थोड़ी बात की। हम जो करने की कोशिश कर रहे हैं वह यह है कि हम उन धार्मिक मुद्दों से निपटने की कोशिश कर रहे हैं जिनके द्वारा वह रोमन कैथोलिक चर्च से असहमत थे। याद रखें, रोमन कैथोलिक चर्च ने उसे लूथर की तरह बाहर नहीं निकाला था।

उन्होंने अपनी इच्छा से रोमन कैथोलिक चर्च को छोड़ दिया और सुधार आंदोलन में शामिल हो गए। लेकिन कुछ मुद्दे थे, कुछ चीजें थीं जिनसे उन्हें परेशानी थी, और उनमें से एक था मानव जाति का उनका सिद्धांत। हमने इस बारे में बात की।

दूसरा होगा ईश्वर का सिद्धांत, ईश्वर के बारे में उनकी समझ। हमने इस बारे में बात की। तीसरा होगा चर्च की समझ।

अगर आप मुझे याद दिला सकें, तो चर्च की समझ के तहत, मुझे लगता है कि आखिरी बात जो हमें करनी थी, वह चर्च की सेवकाई के बारे में बात करना था। हमने व्यवसाय के बारे में बात की, है न? और हमने सभी विश्वासियों के पुरोहितत्व के बारे में बात की। हमने उन दो चीजों के बीच अंतर किया।

क्या यह सही है? सभी को यह समझ में आया? और फिर हमने इस बारे में बात की कि वह किस तरह से मंत्री थे, जो पेशे से मंत्री थे। उन्होंने इस भूमिका को बहुत सम्मान दिया और इसी तरह। मूल रूप से, दो पद थे: पादरी-शिक्षक का पद और डीकन का पद।

क्या हमने इसका जिक्र किया? हमने इसका जिक्र किया। और यहीं पर हमारी बात खत्म हुई। यहीं पर हमारी बात खत्म हुई।

बहुत बढ़िया। यह हमें, हम अभी भी चौथे नंबर पर हैं, चर्च के सिद्धांत की ओर ले जाता है, और यह हमें संस्कारों की ओर ले जाता है। तो, हम चर्च के अंतर्गत हैं, और जब वह चर्च के बारे में बात कर रहा है तो उसे संस्कारों की प्रकृति से निपटना होगा।

तो यह बात खत्म हो गई, और फिर हम पूर्वनियति और दो राज्यों पर पहुंचेंगे। ठीक है, तो चलिए संस्कारों के बारे में बात करते हैं। पहली बात यह है कि कैल्विन ने रोमन कैथोलिक चर्च के सात संस्कारों को नकार दिया था।

हम अगले व्याख्यान में ट्रेट की परिषद में देखेंगे कि चर्च ने अब तक सात संस्कारों पर काफी हद तक सहमति बना ली थी। और कैल्विन ने इस बात से इनकार किया कि सात संस्कार हैं। कैल्विन ने कहा कि दो संस्कार हैं।

बपतिस्मा का संस्कार है, और प्रभु भोज का संस्कार है। ये दो संस्कार हैं। अब, वह क्यों कहेगा कि केवल दो संस्कार हैं? किस आधार पर? बाइबल के आधार पर।

पवित्रशास्त्र के आधार पर, उसे बाइबल में अन्य पाँच संस्कारों के लिए कोई वारंट नहीं मिला। उसे केवल इन दो के लिए वारंट मिला। इसलिए, वह तुरंत ही, एक तरह से, संस्कारों की संख्या के मामले में चर्च के साथ बहस करना शुरू कर देता है।

अब, हमें यह भी ध्यान रखना चाहिए कि संस्कारों के संदर्भ में, एक व्यक्ति था जिससे वह सुधारवादी परंपरा, प्रोटेस्टेंट परंपरा में संस्कारों के मामले में असहमत था, और वह था ज़िंगली।

वह संस्कारों के मामले में बीच का रास्ता अपनाने जा रहा है। वह मूल रूप से संस्कारों और विशेष रूप से प्रभु भोज के बारे में रोमन कैथोलिक धारणा और संस्कारों, विशेष रूप से प्रभु भोज के बारे में ज़िंगली की धारणा के बीच एक मध्य मार्ग अपनाने जा रहा है।

ज़िंगली प्रोटेस्टेंट थे, इसलिए वे बपतिस्मा और प्रभु भोज में विश्वास करते थे। लेकिन रोमन कैथोलिक पक्ष, ज़िंगलियन पक्ष में, ज़िंगली ने संस्कारों को प्रतीकात्मक रूप में देखा। ये प्रतीक हैं।

हम प्रतीक के रूप में बपतिस्मा देते हैं। हम प्रभु भोज को प्रतीक के रूप में देते हैं। लेकिन वे प्रतीकात्मक थे। एक अर्थ में, वे केवल प्रतीकात्मक थे।

केल्विन इस बात पर विश्वास नहीं करते थे। केल्विन का मानना था कि बपतिस्मा और प्रभु भोज में सिर्फ़ इतना ही नहीं है कि बपतिस्मा और प्रभु भोज किसी चीज़ का प्रतीक हैं। यहाँ इससे कहीं ज़्यादा कुछ चल रहा था।

इसलिए, वह ज़िंगली से बहस करता है। साथ ही, ज़ाहिर है, जब बात रोमन कैथोलिक चर्च की आती है, जब प्रभु के भोज की बात आती है, तो वह रोमन कैथोलिक चर्च से बहस करता है क्योंकि प्रभु के भोज में, जबकि ज़िंगली का मानना था कि यह सिर्फ़ प्रतीकात्मक था, रोमन कैथोलिक चर्च ने सिखाया कि यूचरिस्ट वास्तव में मसीह का शरीर और रक्त था। यह सचमुच मसीह का शरीर और रक्त था।

जब पुजारी ने इसे धन्य घोषित किया, तो यह मसीह का शरीर और रक्त बन गया। अब, केल्विन यूचरिस्ट के बारे में इस बात पर विश्वास नहीं कर सका। इसलिए, इसे ट्रांसबस्टैंटिएशन कहा जाता है।

हमने पहले भी इस बारे में बात की है, लेकिन ट्रांसबस्टैंटिएशन तब होता है जब पदार्थ वास्तव में मसीह के शरीर और रक्त में बदल जाता है। अब, रोमन कैथोलिक चर्च ने सिखाया कि दुर्घटनाएँ वही रहती हैं। और दुर्घटनाएँ बाहरी हैं: इसकी गंध रोटी की तरह होती है, स्वाद रोटी जैसा होता है, दिखने में रोटी जैसा होता है, गंध शराब जैसी होती है, स्वाद शराब जैसा होता है, दिखने में शराब जैसा होता है।

ये दुर्घटनाएँ हैं। रोमन कैथोलिक धर्मशास्त्र में रोटी और शराब का बाहरी स्वरूप यही है। रोटी और शराब का बाहरी स्वरूप यही है।

लेकिन इसका सार बदल गया है, और इसका सार मसीह का शरीर और रक्त बन गया है। इसलिए, केल्विन ने एक अर्थ में बीच का रास्ता अपनाया, क्योंकि जहाँ तक उनका सवाल है, एक और शब्द है जिसके बारे में हमने शायद पहले बात की थी या जिसका उल्लेख किया था, और वह शब्द है स्कोलास्टिसिज़्म। जहाँ तक उनका सवाल है, ट्रांसबस्टैंटिएशन की यह रोमन कैथोलिक धारणा एक स्कोलास्टिक दार्शनिक परंपरा से निकलती है।

उन्होंने ट्रांसबस्टेंटिएशन को बाइबिल के अनुसार नहीं देखा। इसलिए, उन्हें लगता है कि यह फिर से, किसी बाइबिल सिद्धांत के मात्र दार्शनिक तर्क का एक और उदाहरण है। इसलिए, कैल्विन बपतिस्मा और भोज को मानते हैं, लेकिन निश्चित रूप से, ज़िंगली और रोमन कैथोलिकों के बीच एक मध्यम मार्ग अपनाते हैं।

अब, अगर मैं कर सकता हूँ तो मैं उनमें से प्रत्येक का उल्लेख करूँगा। जब बपतिस्मा की बात आती है, तो कैल्विन के लिए, बपतिस्मा नए समुदाय में शामिल होने का मतलब है। आपको नए समुदाय में ले जाया जाता है।

आपको धरती पर मसीह के शरीर में ले जाया जाता है। कैल्विन के लिए बपतिस्मा सिर्फ एक निजी अनुभव नहीं है। यह समुदाय के लिए एक अनुभव है क्योंकि यह समुदाय ही है जो आपको घेरे रहता है और आपको मसीह की समानता में पालने के लिए अनुबंध करता है और इसी तरह की अन्य बातें भी करता है।

इसलिए, कैल्विन के लिए बपतिस्मा बहुत महत्वपूर्ण था, और यह दीक्षा संस्कार था। अब, जब प्रभु के भोज की बात आती है, तो वह ज़िंगली और लूथर के बीच एक तरह का मध्य मार्ग अपनाता है। फिर से, प्रभु के भोज के लिए, ज़िंगली के लिए, यह केवल एक स्मारक है।

यह सिर्फ प्रतीकात्मक है, कैल्विन के लिए नहीं। कैल्विन के लिए, यहाँ कुछ बहुत महत्वपूर्ण हो रहा है।

मसीह कैल्विन के लिए प्रभु के भोज में उपस्थित हैं। ठीक है। अब, यह लूथर से किस तरह भिन्न है? लूथर ने प्रभु के भोज में यही सिखाया, और आप में से कुछ लोग अपनी सभी परंपराओं को नहीं जानते होंगे।

आपमें से कुछ लोग लूथरन पृष्ठभूमि के हो सकते हैं। शायद आप हैं। और अगर आपकी पृष्ठभूमि लूथरन है, तो आप यह जानते हैं, या आपको यह जानना चाहिए।

लेकिन लूथर ने सिखाया कि जब आप प्रभु का भोज लेते हैं, तो मसीह स्वर्ग से उतरकर प्रभु के भोज लेने की उस क्रिया में आपके साथ रहता है। इसलिए, वह मौजूद है। वह पूरी तरह से मौजूद है।

लूथर के लिए प्रभु के भोज में मसीह की वास्तविक उपस्थिति है। ठीक है। कैल्विन आता है और कहता है, ठीक है, मैं ज़िंगली से असहमत हूँ।

यह सिर्फ एक स्मारक नहीं है। यह सिर्फ एक याददाश्त की बात नहीं है। वास्तव में कुछ घटित हो रहा है।

लेकिन दूसरी ओर, मैं इस मामले में लूथर से असहमत हूँ। लूथर से असहमत होने का कारण यह है कि जहाँ तक कैल्विन का सवाल है, मसीह अभी भी परमेश्वर पिता के दाहिने हाथ पर बैठा है।

इसलिए, आप मसीह को परमेश्वर पिता के दाहिने हाथ पर नहीं रख सकते और साथ ही हर बार जब यूचरिस्ट मनाया जाता है या प्रभु भोज मनाया जाता है, तो उसे भी नहीं रख सकते।

तो, ऐसा नहीं है, केल्विन ने कहा। तो, जब प्रभु के भोज की बात आती है, तो केल्विन का मानना था कि प्रभु का भोज आपको मसीह की उपस्थिति में ले जाता है।

अब, आप इस पर तर्क नहीं कर सकते। आप विद्वान नहीं बनना चाहते और यह नहीं कहना चाहते कि मैं आपको बताऊंगा कि यह कैसे होता है। लेकिन केल्विन के लिए, जब आप प्रभु का भोज लेते हैं, तो आप किसी तरह मसीह की उपस्थिति में होते हैं क्योंकि आपको उस उपस्थिति में ले जाया गया है।

इसलिए, उन्होंने सुधारकों के बीच एक मध्यम मार्ग अपनाया। उन्होंने ज़िंगली के बीच एक मध्यम मार्ग अपनाया; यह केवल एक स्मारक है, और लूथर और क्राइस्ट नीचे आ गए हैं। केल्विन ने कहा, नहीं, मैं यहाँ बीच में खड़ा होने जा रहा हूँ।

मैं यह कहने जा रहा हूँ कि आपने मसीह को अपना लिया है, लेकिन हम इसे परिभाषित नहीं कर सकते। लेकिन आप इसे विश्वास से मानते हैं। तो, दो संस्कार केल्विन के लिए वास्तव में महत्वपूर्ण थे, इसमें कोई संदेह नहीं है।

और इसलिए, वह संख्या के मामले में रोमन कैथोलिक चर्च से असहमत हैं, ट्रांसबस्टेंटिएशन के पूरे व्यवसाय के मामले में रोमन कैथोलिक चर्च से असहमत हैं, और एक तरह से बपतिस्मा क्या है और प्रभु भोज क्या है, इसे फिर से आकार देते हैं। ठीक है, तो यह चर्च के बारे में उनकी समझ है, चर्च के बारे में उन सभी तरह के मुद्दों, चर्च के जीवन के बारे में। क्या इस बारे में कोई सवाल है, चर्च और चर्च के जीवन, चर्च के कार्यालयों, चर्च के संस्कारों या उस तरह की चीज़ों के बारे में उनकी सोच के बारे में? कोई सवाल? हाँ।

हाँ। केल्विन के लिए, बपतिस्मा एक नए समुदाय में प्रवेश है। आपको एक नए समुदाय में ले जाया जा रहा है।

और यही धरती पर मसीह का शरीर है। लेकिन यह इस बच्चे के लिए निजी अनुभव नहीं है क्योंकि वह लूथर की तरह शिशु बपतिस्मा में विश्वास करता था। यह निजी अनुभव नहीं है, लेकिन यह समुदाय के लिए एक अनुभव है।

तो, पूरा समुदाय गवाही देता है और इस बच्चे को आस्था के साथ पालने का वादा करता है और इसी तरह की अन्य बातें करता है। लेकिन यह एक तरह की दीक्षा है। क्या इससे मदद मिलती है... हाँ।

अब, अगर आप प्रेस्बिटेरियन पृष्ठभूमि से आते हैं, अगर आप कैल्विनिस्टिक पृष्ठभूमि से आते हैं, तो शायद आपको शिशु के रूप में बपतिस्मा दिया गया था। शायद पाठ्यक्रम के अंत में, हम यह पता लगा सकें कि आप सभी अपनी पृष्ठभूमि के संदर्भ में कहाँ से आते हैं, क्या आपको बपतिस्मा दिया गया था, और इसी तरह। चर्च के बारे में कोई और सवाल? ठीक है।

खैर, जीवन के किसी न किसी पड़ाव पर आपको पूर्वनियति के बारे में बात करनी ही होगी। यह जॉन कैल्विन के साथ है, इसलिए हम इसे यहाँ करेंगे। तो, पूर्वनियति, हम कैल्विन के लिए पूर्वनियति के सिद्धांत के बारे में कैसे बात करेंगे? दो राज्यों के सिद्धांत पर जाने से पहले हमें इसके बारे में बहुत कुछ कहना होगा।

ठीक है। तो, ऐसा करने से पहले, मैं कक्षा को आधे में बांटने जा रहा हूँ। आप जहाँ हैं, वहीं बैठें।

और मुझे यहाँ एक निर्णय लेना है। मुझे नहीं पता। मुझे लगता है कि मुझे यह निर्णय लेना चाहिए क्योंकि इस तरफ दो अच्छी महिलाएँ हैं।

तो, चलो कक्षा को आधे में विभाजित करते हैं। और फिर मैं बस इसे समझाना चाहता हूँ। और फिर मैं पूर्वनियति के उनके सिद्धांत को समझाना जारी रखूँगा।

यह वर्ग आधे में विभाजित है। ठीक है। इस तरफ, आप लोगों को समय की शुरुआत से पहले, सृष्टि से पहले, भगवान द्वारा बचाया और छुड़ाया जाना पूर्वनिर्धारित किया गया है।

दूसरी ओर, आप लोगों को सृष्टि से पहले ही ईश्वर द्वारा शापित होने के लिए पूर्वनिर्धारित किया गया है, क्योंकि कैल्विन दोहरे चुनाव में विश्वास करते थे, जैसा कि हम देखेंगे। तो इन लोगों के प्रति आपका रवैया क्या होना चाहिए जो बचाए गए हैं और चर्च में हैं? आपका रवैया क्या होना चाहिए? आपका रवैया यह होना चाहिए, मुझे खुशी है कि ईश्वर की कृपा ने उनके जीवन में इस खूबसूरत तरीके से काम किया है। आपको यहाँ आनन्दित होना चाहिए।

अब, क्या आप खुश हो रहे हैं? नहीं, आप इस भीड़ में खुश नहीं हो रहे होंगे। और साथ ही, यह तथ्य कि आप खुश नहीं हो रहे हैं, यह दर्शाता है कि परमेश्वर हर समय आपको दोषी ठहराने में सही था। इसलिए, वह अपने चुनाव में सही था क्योंकि आप इतने चिड़चिड़े हैं।

अब, इस समूह के प्रति आपका रवैया क्या होना चाहिए? आपका रवैया क्या होना चाहिए? भगवान की कृपा के बिना मैं यहाँ नहीं हूँ। अगर भगवान की कृपा न होती, तो मैं यहाँ होता। लेकिन भगवान की कृपा से, आपको चुना गया है। और आपका रवैया भी यही है, जब आप इन लोगों को देखते हैं जो नरक के लिए चुने गए हैं, तो आप भी महसूस करते हैं कि सभी को नरक में भेजा जाना चाहिए।

यह तथ्य कि भगवान ने कुछ लोगों को मुक्ति दिलाई है, एक चमत्कार है। तो अब, आइए हम आप सभी को फिर से एक साथ रखें, और यहाँ वर्ग को विभाजित न करें। लेकिन यह एक दोहरा चुनाव है।

तो, हम इससे कैसे निपटेंगे? मैं सबसे पहले तीन परिचयात्मक टिप्पणियाँ करके इससे निपटने जा रहा हूँ, जिन पर ध्यान देना ज़रूरी है। और फिर, हम उनके पूर्वनियति के सिद्धांत की कुछ निरपेक्ष विशेषताओं को जानने की कोशिश करेंगे। तो, तीन परिचयात्मक टिप्पणियाँ।

नंबर एक, यह कैल्विन का सबसे महत्वपूर्ण सिद्धांत नहीं है। आपको जॉन कैल्विन को उनके पूर्वनियति के सिद्धांत से नहीं आंकना चाहिए क्योंकि आप संभवतः इससे सहमत नहीं होंगे। हो सकता है कि आप में से कुछ लोग सहमत हों।

मुझे नहीं पता। लेकिन आप शायद इससे सहमत न हों। लेकिन आपको इस सिद्धांत के आधार पर कैल्विन का मूल्यांकन नहीं करना चाहिए।

यह सिद्धांत वास्तव में संस्थान में बहुत गहराई से समाया हुआ है। चुनाव के उनके सिद्धांत तक पहुँचने से पहले आपको सैकड़ों पृष्ठ पढ़ने होंगे। इसलिए, आपको यह याद रखना होगा।

यह महत्वपूर्ण है। कैल्विन को सिर्फ़ इसी सिद्धांत से मत आंकिए। इसके अलावा भी कई बेहतरीन सिद्धांत हैं।

तो यह पहली बात है। ठीक है। दूसरी बात जिस पर आपको ध्यान देना चाहिए वह यह है कि इसे दोहरा चुनाव कहा जाता है क्योंकि सेंट ऑगस्टीन पूर्वनियति में विश्वास करते थे।

मार्टिन लूथर पूर्वनियति में विश्वास करते थे। हालाँकि, वे पूर्वनियति में विश्वास करते थे, उन लोगों का चुनाव जो बचाए जाने वाले थे। इसलिए यह एक तरह की एकल पूर्वनियति थी।

वामपंथियों को अपने हाल पर छोड़ दिया गया। उनके पास दोहरे चुनाव के बारे में वह तीखा विचार नहीं था जो कैल्विन के पास था। इसलिए कैल्विन आगे आए और उन्होंने ऑगस्टीन पर विश्वास किया।

वह लूथर पर विश्वास करते हैं। लेकिन उन्होंने कहा कि हमें इसे और स्पष्ट करना होगा। हमें इसे और अधिक स्पष्ट रूप से, और अधिक बाइबिल के अनुसार परिभाषित करना होगा।

तो, वह दोहरे चुनाव में विश्वास करते हैं, सिर्फ़ ऑगस्टीन या लूथर के चुनाव में नहीं। तो, हमें इस पर ध्यान देने की ज़रूरत है। ठीक है।

और तीसरी बात जिस पर हमें ध्यान देने की ज़रूरत है, वह यह है कि इस सिद्धांत में, कैल्विन वास्तव में मानते हैं कि वे ईश्वर के सम्मान और ईश्वर की स्वतंत्रता की रक्षा कर रहे हैं। यदि आप उस शब्द का उपयोग करना चाहते हैं, तो वे ईश्वर के सम्मान की रक्षा कर रहे हैं, और जब वे पूर्वनियति के बारे में बात करते हैं, तो वे ईश्वर की स्वतंत्रता की रक्षा कर रहे हैं। ठीक है।

इन तीन टिप्पणियों के बाद, आइए हम यहाँ पूर्वनियति के बारे में कुछ बातें कहें। सबसे पहले, कैल्विन एक ऐसे व्यक्ति का आदर्श उदाहरण है जिसे दुनिया की शुरुआत से पहले ही चुन लिया गया था। उनके पास एक आदर्श उदाहरण है।

और वह आदर्श उदाहरण कौन है? यीशु मसीह। मसीह चुनाव का आदर्श उदाहरण है। तो, हमारी आँखों के सामने कोई है।

उन्होंने कहा कि मसीह चुनाव का दर्पण है। इसलिए, यदि आप पूर्वनियति में विश्वास करने जा रहे हैं, तो आपको बहुत दूर देखने की ज़रूरत नहीं है। आप बस मसीह को देखें क्योंकि वह चुनाव का दर्पण है।

और इसलिए यहीं से यह सब शुरू हुआ। इसलिए, सिद्धांत के बारे में हम एक और बात पर ध्यान देना चाहते हैं, और वह यह है कि चुनाव विश्वास से कैसे संबंधित है। यह जॉन कैल्विन के लिए बहुत महत्वपूर्ण हो जाता है। चुनाव विश्वास से कैसे संबंधित है? खैर, सबसे पहले, एक व्यक्ति चुना जाता है, और फिर भगवान उन्हें उस चुनाव को अपनाने के लिए विश्वास का उपहार देता है।

तो, चुनाव का आस्था से क्या संबंध है? चुनाव पहले आता है, और फिर ईश्वर की ओर से उपहार के रूप में आस्था आती है। इसलिए, कैल्विन के लिए, ऐसा नहीं है कि हर किसी को आस्था थी कि वे शायद ईश्वर और ईश्वर जो कर रहे थे, उस पर विश्वास कर सकें। नहीं।

विश्वास रखने वाला एकमात्र व्यक्ति वह व्यक्ति है जो चुना गया है और ईश्वर द्वारा उसे दिए गए चुनाव को स्वीकार कर सकता है। इसलिए, चुनाव एक उपहार है, और विश्वास भी एक उपहार है। इसलिए ये दोनों चीजें बहुत अच्छी हैं, वे कैल्विन के लिए एक साथ चलती हैं।

ठीक है, एक और बात जिस पर हमें ध्यान देना चाहिए वह है सिद्धांत। चुनाव और अच्छे कामों का क्या संबंध है? खैर, कैल्विन के लिए, चुनाव का अच्छे कामों से कोई लेना-देना नहीं है। कोई भी व्यक्ति जो चुना जाता है, और मैं अब इस वर्ग के इस पक्ष की ओर इशारा नहीं करूंगा क्योंकि हम आप सभी को ईश्वर के अच्छे संतों के रूप में एक साथ रख रहे हैं, लेकिन कोई भी व्यक्ति जो चुना जाता है, वे अपने अच्छे कामों से नहीं चुने जाते हैं।

भगवान उन्हें अपनी संप्रभु इच्छा के अनुसार चुनते हैं। वह उन्हें इसलिए नहीं चुनते कि वे अच्छे काम कर रहे हैं, क्योंकि वे अच्छे लोग हैं या ऐसा कुछ। अब, एक बार जब वे चुने जाते हैं, तो भगवान आपको आशीर्वाद देते हैं, और अच्छे काम उस चुनाव के बाद होंगे।

वे अच्छे काम करना चाहेंगे क्योंकि वे ईश्वर की संतान हैं, लेकिन वे ईश्वर को पाने के लिए अच्छे काम नहीं करते। अब, यह एक ऐसी जगह है जहाँ कैल्विन ने रोमन कैथोलिक चर्च में प्रायश्चित की पूरी प्रणाली पर बहुत जोरदार हमला किया क्योंकि उन्हें लगा कि प्रायश्चित की पूरी प्रणाली एक अच्छे काम की तरह थी जहाँ लोग ईश्वर को पाने या ईश्वर की कृपा में रहने या ऐसा कुछ करने के लिए अच्छे काम कर रहे थे। कैल्विन को यह पसंद नहीं है।

उन्हें नहीं लगता कि वे इससे खुश हैं। इसलिए, चुनाव और अच्छे काम एक साथ चलते हैं, लेकिन परिणाम के रूप में वे एक साथ चलते हैं। अच्छे काम आपके चुनाव के बाद आते हैं।

सिद्धांत के संदर्भ में कैल्विन के लिए एक और बात, और वह यह है कि, क्या आप निश्चित हो सकते हैं कि आप परमेश्वर के बच्चे हैं? क्या आप निश्चित हो सकते हैं कि आप चुने हुए लोगों में से एक हैं? वह इसे अपनी भाषा में रखेगा। और इसका उत्तर है, हाँ, आप कर सकते हैं। आप निश्चित हो सकते हैं, और फिर उत्तर पवित्र आत्मा की गवाही द्वारा था।

कोई भी विश्वासी पवित्र आत्मा की गवाही के द्वारा आश्वासन प्राप्त कर सकता है। इसलिए, कैल्विन के लिए चुनाव का सिद्धांत, एक तरह से लोगों को आश्वासन का सिद्धांत देना था, या आश्वासन का सिद्धांत नहीं, बल्कि लोगों को यह आश्वासन की भावना देना था कि वे वास्तव में परमेश्वर की संतान हैं। यह सिद्धांत का एक कारण है।

अब, आइए हम वापस उस बात पर लौटें जो हमने पहले कही थी। सुधार के लिए एक तरह का युद्धघोष क्या था? विश्वास के द्वारा औचित्य। लेकिन दूसरा क्या था? यह आश्वासन था।

सुधारकों को यकीन था कि मध्ययुगीन रोमन कैथोलिक, जिसका वे हिस्सा थे, उन्हें यकीन था कि उन लोगों को यह भरोसा नहीं था कि वे ईश्वर की संतान हैं। कैल्विन लोगों को भरोसा दिलाना चाहता है। वह चाहता है कि उन्हें पता चले कि वे ईश्वर के चुने हुए लोग हैं।

तो, पवित्र आत्मा की यह गवाही बहुत, बहुत महत्वपूर्ण हो जाती है। ठीक है, हम पहले ही यह कह चुके हैं, लेकिन जो लोग इस पूरे सिद्धांत में शापित हैं, जो लोग शापित हैं, वे क्यों शापित हैं? वे अपने पापों के कारण शापित हैं। वे शापित हैं क्योंकि वे परमेश्वर के विरुद्ध विद्रोह कर रहे हैं।

चूँकि सारी मानवता परमेश्वर के विरुद्ध विद्रोह कर रही है, इसलिए सच्चाई यह है कि सारी मानवता को परमेश्वर द्वारा शापित किया जाना चाहिए। यह तथ्य कि वह किसी को भी उद्धार के लिए चुनने जा रहा है, शानदार है।

यह उसकी महिमा के लिए है कि वह ऐसा करने जा रहा है। लेकिन कैल्विन, चुनाव के इस पूरे सिद्धांत में, वह पाप और परमेश्वर के खिलाफ हमारे विद्रोह और परमेश्वर की सज़ा के हमारे योग्य होने आदि के बारे में पूरी कहानी बताता है। हम सभी इसके लायक हैं, लेकिन परमेश्वर की कृपा से, कुछ लोग उद्धार के लिए चुने जाते हैं, इसलिए उनके पास यह नहीं है।

ठीक है, यह एक और बात है जिस पर हमें ध्यान देना चाहिए। यह सब पूर्वनियति परमेश्वर की महिमा के लिए है। अब, याद रखें कि हमने कहा था कि वह पहले नाममात्रवादियों से प्रभावित था, लेकिन हम नाममात्रवाद और दर्शन को याद करते हैं, और वह किसी तरह से नाममात्रवादियों से प्रभावित है।

लेकिन चुनाव के सिद्धांत के साथ, वह नाममात्रवाद से अलग हो जाता है। वह कौन सी जगह है जहाँ वह नाममात्रवादियों से असहमत था? क्या आपको धार्मिक नाममात्रवादियों की तरह की बातें याद हैं और वह जगह जहाँ वह उनसे अलग हो जाता है? और यह यहाँ होने जा रहा है। यह यहाँ चुनाव के सिद्धांत में दिखाई देने जा रहा है।

ठीक है, फिर से दोहराता हूँ, एक जगह जहाँ वह उनसे अलग हो जाता है, वह है नाममात्रवादियों की शिक्षा कि ईश्वर की इच्छा ईश्वर की इच्छा है, चाहे कुछ भी हो। ईश्वर की इच्छा ईश्वर की इच्छा है, और यह सही है, चाहे आप इसके बारे में कुछ भी सोचें। यह ईश्वर की इच्छा है।

और देखिए, केल्विन इससे असहमत थे। उन्हें बाइबल में ऐसा नहीं दिखता। उनका कहना है कि परमेश्वर की इच्छा सही है, लेकिन हम इसे सही इसलिए जानते हैं क्योंकि यह न्याय के रूप में सामने आती है।

यह दया में प्रकट होता है। यह प्रेम में प्रकट होता है। इसलिए केल्विन के लिए परमेश्वर की इच्छा इन तरीकों से प्रदर्शित होती है।

इसलिए, वह यह नहीं कहने जा रहा है, जैसा कि नाममात्रवादी ने कहा, कि ईश्वर की इच्छा ईश्वर की इच्छा है। यह सही है, चाहे कुछ भी हो। आपको बस इस पर विश्वास करना होगा, और नहीं, वह ऐसा नहीं कहने जा रहा है।

वह कहेगा कि पूर्वनियति और चुनाव सही हैं क्योंकि वे परमेश्वर के न्याय को प्रदर्शित करते हैं। यह परमेश्वर के प्रेम को प्रदर्शित करता है। यह एक तरह से परमेश्वर की दया को प्रदर्शित करता है।

तो यहाँ वह नाममात्रवादियों से अलग हो जाता है। वह इस बारे में ज़्यादा बाइबल आधारित होने की कोशिश करता है। इसलिए, केल्विन के लिए, ईश्वर मनमाना नहीं है।

देखिए, नामधारी लोगों का ईश्वर मनमाना था। ईश्वर वही करता है जो उसे अच्छा लगता है, बस। कोई सवाल मत पूछिए।

एक तरह से मनमाना ईश्वर। केल्विन के लिए, ईश्वर मनमाना नहीं है। यह कोई मनमाना काम नहीं है जो वह कर रहा है।

हमें चुनाव और पूर्वनियति के संदर्भ में परमेश्वर की इच्छा के बारे में जितना संभव हो सके उतना समझने की कोशिश करनी चाहिए, और हम इसे पूरी तरह से नहीं समझ पाएंगे। लेकिन दूसरी ओर, हम परमेश्वर के काम के बारे में मनमानी करने के लिए खुद को तैयार नहीं करते हैं। नहीं, यहाँ कुछ ऐसा चल रहा है जिसे हमें समझने की कोशिश करनी चाहिए, लेकिन हम इसे पूरी तरह से नहीं समझ सकते।

इसमें कोई संदेह नहीं है। जब बात चुनाव की आती है तो आप परमेश्वर की पूरी इच्छा को नहीं समझ सकते। अगर आप यह सब समझने की कोशिश करते हैं, तो केल्विन ने इसे बेकार की अटकलें कहा है।

आप बेकार की अटकलों के एक बिंदु पर पहुंच जाते हैं, आप सब कुछ समझ नहीं पाएंगे। अब, यहाँ बस कुछ और बातें हैं। अब, चुनाव और पूर्वज्ञान के बीच क्या संबंध है? क्योंकि परमेश्वर सभी चीजों को पहले से जानता है, है न? चुनाव और पूर्वज्ञान के बीच क्या संबंध है? खैर, केल्विन ने सोचा कि इस बारे में बात करना महत्वपूर्ण है।

केल्विन के लिए, चुनाव पहले आता है। चुनाव पहले आता है। वह उन लोगों को चुनता है जो बचाए जाने वाले हैं।

वह उन लोगों को चुनता है जो खो जाने वाले हैं। और क्योंकि उसने ऐसा किया है, वह पहले से जानता है कि कौन बचाया जाएगा और कौन खो जाएगा। आप देखिए, कुछ लोग इस सिद्धांत से निपटने की कोशिश कर रहे हैं जैसे कि परमेश्वर पहले से जानता है कि कौन बचाया जाएगा और कौन खो जाएगा क्योंकि वह उनके विश्वास से वर्तमान में सब कुछ देखता है, और इसलिए, वह चुनता है।

इसलिए, कुछ लोग कह रहे हैं कि पूर्वज्ञान पहले आता है, और क्योंकि वह पहले से जानता है, इसलिए वह चुनाव करता है। कैल्विन ने कहा, नहीं, यह पीछे की बात है। इसे समझने का सही तरीका यह है कि चुनाव पहले आता है, और क्योंकि वह अब चुना गया है, इसलिए वह पहले से जानता है क्योंकि उसने दुनिया के निर्माण से पहले ही चुनाव कर लिया है।

अब, एक अंतिम बात। आपको पता होना चाहिए कि कैल्विन के चुनाव के सिद्धांत से हर कोई खुश नहीं था। ऐसे लोग भी थे जो कैल्विन द्वारा सिखाई गई अन्य बातों पर विश्वास करते थे, लेकिन वे चुनाव के सिद्धांत से विशेष रूप से खुश नहीं थे।

सवाल यह है कि वे खुश क्यों नहीं थे? चुनाव के सिद्धांत से उन्हें क्या परेशानी थी? ठीक है, तीन तरह की परेशानियाँ थीं। तो इस सिद्धांत के खिलाफ़ तीन तरह के तर्क थे, यहाँ तक कि कैल्विन के दिनों में भी। ठीक है, पहला तर्क कैल्विन के अनुयायियों में से एक थियोडोर बेज़ा द्वारा प्रस्तुत किया गया है।

मैं यहाँ दस्तावेज़ कैमरे पर जाता हूँ। पहला यह था कि यह कैल्विन के बाद बेज़ा की दूसरी पीढ़ी थी, इसलिए तीसरी पीढ़ी के सुधारक की तरह। यह बेज़ा का चुनाव का सिद्धांत है।

नीचे की ओर ध्यान दें। इसमें लिखा है कि थियोडोर बेज़ा का आरेख मानव मुक्ति के तार्किक अनुक्रम को दर्शाता है, जिसमें चुनाव के दिव्य आदेश दिखाए गए हैं, बेशक सभी लैटिन में। अब, यह यहाँ है।

अब, बस इसे देखते हुए, क्या यह चुनाव की एक सरल पादरी, बाइबिल की तरह की समझ की तरह दिखता है जिसे बेंच पर बैठा आदमी समझ सकता है? मुझे ऐसा नहीं लगता। मुझे ऐसा नहीं लगता। मुझे लगता है कि इस बात को समझने में आपको हमेशा लग जाएगा।

लेकिन यहीं पर कैल्विन का पूर्वनियति का सिद्धांत चला गया। विडंबना यह है कि कैल्विन विद्वत्तावाद से दूर रहने की कोशिश कर रहा था, और विद्वत्तावाद एक तरह की मध्ययुगीन दुनिया है जो हर चीज को समझने की कोशिश करती है, आप जानते हैं, एक पिन के सिर पर कितने देवदूत नाचते हैं जैसी चीजें। जब वह विद्वत्तावाद से दूर रहने की कोशिश कर रहा था, तो उसके अनुयायियों ने सिद्धांत को बहुत ही विस्तृत तरीके से समझाया।

और इससे बेंच पर बैठे व्यक्ति की मदद नहीं होती। बेंच पर बैठे व्यक्ति की मदद करना कोई पादरी वाली बात नहीं है; यह सब लैटिन वगैरह में लिखा है। तो यह पहली बात है।

ऐसा लगता है कि कैल्विन जिस चीज़ से दूर रहना चाहता था, वह थी विद्वत्तावाद, और जिस चीज़ में उसके लोग शामिल थे, जिन्होंने पूर्वनियति के सिद्धांत का बचाव करने की कोशिश की, वह थी विद्वत्तावाद। इसलिए, सिद्धांत को समझाने के लिए बेयस का प्रयास ऐसा लगता है कि यह बाइबल की अनुमति से कहीं अधिक विस्तृत है, आप जानते हैं। तो यह इसका आदर्श उदाहरण है।

यह आलोचना का सबसे पहला प्रकार है। ठीक है, सिद्धांत के बारे में अपने समय में कैल्विन की दूसरी आलोचना यह है कि जबकि उन्हें लगा कि सिद्धांत लोगों को बहुत आश्वासन दे रहा है, यह वास्तव में इसके विपरीत कारण बना। इसने लोगों में बहुत चिंता पैदा की क्योंकि लोग हमेशा कहते थे कि लोगों को बचाने के लिए चुना जाता है। लोगों को शापित होने के लिए चुना जाता है।

शायद मैं शापित लोगों में से एक हूँ। शायद मैं बचाए गए लोगों में से नहीं हूँ। वैसे भी, केवल भगवान ही जानता है।

लेकिन अब यह बहुत आश्चर्य करने वाला नहीं है अगर आप ऐसा महसूस करते हैं। ठीक है, अब हमारे पास इसका एक अच्छा ऐतिहासिक उदाहरण है, और वह है मार्टिन लूथर। जब मार्टिन लूथर ने पूर्वनियति के सिद्धांत पर विश्वास किया, जब मार्टिन लूथर ने अपने बारे में पूर्वनियति के सिद्धांत के बारे में सोचना शुरू किया, तो इससे उन्हें कोई आश्वासन नहीं मिला।

वह वास्तव में सोचता था कि वह शापित लोगों में से एक है। तो यहाँ लूथर खुद है, जिसने सिद्धांत सिखाया, कैल्विन की तरह नहीं क्योंकि उसने दोहरे चुनाव की शिक्षा नहीं दी, लेकिन यहाँ लूथर खुद है, जिसने सिद्धांत सिखाया, और फिर भी उसे लगता है कि वह शापित होने के लिए चुना गया है। लूथर के लिए कोई आश्वासन नहीं है।

अब, लूथर को दूसरे तरीकों से ईश्वर को खोजना था, लेकिन लूथर के लिए वहाँ कोई आश्वासन नहीं था। तो यह दूसरी बात है, आश्वासन। कैल्विन का मानना था कि इससे लोगों को आश्चर्य करने में मदद मिलेगी, लेकिन इससे बहुत से लोगों को बहुत दुख हुआ, आप जानते हैं।

ठीक है, और तीसरी बात। तीसरी आलोचना जो कैल्विन के दिनों में शुरू हुई थी, वह भी उन्हीं की तरह की थी: यदि आप दोहरे चुनाव को बढ़ावा देते हैं तो आपके पास परमेश्वर के बारे में किस तरह की समझ है? क्या यह बाइबल का परमेश्वर है? लोगों ने यह सवाल पूछना शुरू कर दिया। क्या बाइबल का परमेश्वर ऐसा परमेश्वर है जो ऐसा करेगा, लोगों को उद्धार के लिए चुनेगा, लोगों को दण्ड के लिए चुनेगा, उन्हें प्रतिक्रिया करने की अपनी स्वतंत्रता नहीं देगा, और इसी तरह? तो, इसने परमेश्वर की प्रकृति पर सवाल उठाना शुरू कर दिया जिसे कैल्विन चित्रित कर रहा था।

तो ये तीन तरह की प्रतिक्रियाएँ थीं जो कैल्विन के पास आईं, और हम उन प्रतिक्रियाओं को अगली सदी में, 16वीं सदी, 17वीं सदी और 18वीं सदी में देखेंगे। हम देखेंगे कि वे किस तरह से सामने आईं। ठीक है, तो यह पूर्वनियति का सिद्धांत है।

कहीं न कहीं, जब आप कैल्विन के बारे में बात करते हैं, तो आपको चुनाव के बारे में बात करनी ही होगी। यह ऐसा करने के लिए स्वाभाविक जगह है क्योंकि वह रोमन कैथोलिक धारणा का

जवाब दे रहा है जो चुनाव नहीं सिखाती, रोमन कैथोलिक धारणा जो आपके भीतर जो कुछ भी है उसे सर्वश्रेष्ठ करने की है, और भगवान आपको मुक्ति दिलाएंगे, और इसी तरह। तो, इसके बारे में कोई सवाल है? मैं बस इसे छोड़ता हूँ और लैपटॉप पर वापस जाता हूँ, जिसकी मुझे आवश्यकता होगी।

लेकिन इस बारे में कोई सवाल है कि हम अब तक कहाँ पहुँचे हैं? हमें केल्विन के साथ एक और काम करना है। ठीक है, एक आखिरी बात। यह केल्विन का दो साम्राज्यों का सिद्धांत है।

ठीक है, दो राज्यों का सिद्धांत। और हम यहाँ क्या कर रहे हैं? ठीक है, तो दो राज्य क्या हैं? परमेश्वर का राज्य है, और वह नागरिक व्यवस्था है जिसमें हम रहते हैं। तो आपको परमेश्वर का राज्य मिल गया है जिसके बारे में यीशु ने कहा था, आप जानते हैं, अपने मंत्रालय की शुरुआत में मार्क के सुसमाचार में, परमेश्वर का राज्य निकट है।

पश्चाताप करो और सुसमाचार पर विश्वास करो। तो, तुम्हें परमेश्वर का राज्य मिल गया है। और फिर, दूसरी ओर, तुम्हें नागरिक सरकार मिल गई है जिसके अधीन तुम रहते हो।

अब, हर ईसाई उन दोनों राज्यों में रहता है। हर ईसाई एक तरफ भगवान के राज्य में रहता है, लेकिन दूसरी तरफ रोजमर्रा के राज्य, मानव जाति के राज्य में भी रहता है। इसलिए, जहाँ तक केल्विन का सवाल है, ये दो अलग-अलग राज्य हैं।

आपको इन दो राज्यों, ईश्वर के राज्य और मानवता के राज्य को लेकर भ्रमित नहीं होना चाहिए। ईश्वर दोनों राज्यों का निर्माता है, लेकिन आपको उन्हें भ्रमित नहीं करना चाहिए। ठीक है, और ऐसे लोगों का एक समूह था जो उन्हें भ्रमित करता था।

वे एनाबैपटिस्ट के नाम से जाने जाते थे। एनाबैपटिस्ट ने उन दो राज्यों को एक साथ लाया, और ईश्वर का राज्य यही था, एनाबैपटिस्टों के लिए, नागरिक सरकार बन गया। और केल्विन कहते हैं कि आपको इन दो राज्यों को भ्रमित नहीं करना चाहिए।

हमें परमेश्वर के राज्य के बारे में बात करने की ज़रूरत है। हमें मानव जाति के राज्य के बारे में बात करने की ज़रूरत है। दोनों राज्य परमेश्वर द्वारा नियुक्त किए गए हैं, लेकिन अगर आप उन राज्यों को भ्रमित करते हैं, तो आप मुश्किल में पड़ जाएँगे।

इसलिए, केल्विन को उन दो राज्यों के बीच अंतर करना होगा। अब, जब बात मानव जाति के राज्य की आती है, तो केल्विन क्या नहीं चाहते हैं, जब आप इस रोजमर्रा की दुनिया में रहते हैं, नागरिक सरकार के अधीन रहते हैं, और वह नागरिक सरकार के अधीन रहते थे, तो वह जो नहीं चाहते हैं वह है नागरिक सरकार के प्रति अत्यधिक अधीनता। एक तरफ, आपको नागरिक सरकार के प्रति इतना अधीन नहीं होना चाहिए कि आप उनके अन्याय के लिए उन्हें न बुलाएँ।

लेकिन दूसरी तरफ, वह अराजकता नहीं चाहता। वह यह भी नहीं चाहता कि हर कोई अपनी मर्जी से काम करे। तो, वह क्या करने की कोशिश कर रहा था? मैं एक तरह से बीच का रास्ता अपनाने की कोशिश कर रहा हूँ।

ठीक है, अब, परमेश्वर का राज्य, मुझे लगता है कि इसे समझना बहुत आसान है। परमेश्वर का राज्य, मसीह में जीवन, मसीह का शरीर, चर्च, और चर्च में आपका जीवन। मुझे नहीं लगता कि हमें कैल्विन के बारे में बहुत बात करने की ज़रूरत है कि वह किस तरह से वहाँ पहुँचने की कोशिश कर रहा है।

लेकिन फिर हम मानव जाति के राज्य के बारे में बात करते हैं। मूल रूप से, जहाँ तक उनका सवाल है, हम नागरिक सरकार के बारे में बात करने जा रहे हैं। हम नागरिक जीवन के बारे में बात करने जा रहे हैं।

हम इस दुनिया में जिस जीवन में रहते हैं, उसके बारे में बात करने जा रहे हैं। जैसा कि मैंने कहा, मुझे नहीं लगता कि हमें परमेश्वर के राज्य में जीवन के बारे में बहुत ज़्यादा बात करने की ज़रूरत है। भगवान आपको चर्च और अन्य जगहों पर आशीर्वाद दें।

लेकिन मुझे लगता है कि जब कैल्विन की बात आती है तो उस दुनिया में जीवन के बारे में बात करना बहुत महत्वपूर्ण है जिसमें हम रहते हैं। ठीक है, सबसे पहले, जहाँ तक उसका संबंध है, नागरिक सरकार के दो प्राथमिक कार्य हैं। अब याद रखें, वह हमारे दिन से, हमारी दुनिया से अलग दिन में रह रहा है।

हालाँकि, नागरिक सरकार के दो प्राथमिक कार्य हैं। यह सार्वजनिक व्यवस्था बनाए रखने का नागरिक कार्य है। तो यह नागरिक सरकार का काम है।

यह नहीं बदला है। यह सच है, आप जानते हैं, पश्चिमी संस्कृति में, संयुक्त राज्य अमेरिका के राष्ट्रपति को सार्वजनिक व्यवस्था बनाए रखने की उम्मीद है। और यही वह काम है जो नागरिक सरकार को करने के लिए कहा जाता है।

ठीक है? सर्वेटस को किसने जलाया? क्या यह कैल्विन था या यह नागरिक सरकार थी? यह नागरिक सरकार थी। और उन्होंने ऐसा किस कारण से किया? सार्वजनिक व्यवस्था बनाए रखने के लिए। क्योंकि विधर्म सार्वजनिक व्यवस्था का विघटन था।

तो यह याद रखना महत्वपूर्ण है। ठीक है, तो यह एक बात है। ठीक है, अब सरकार का दूसरा कार्य, जहाँ तक कैल्विन का संबंध था, सरकार का दूसरा कार्य एक धार्मिक कार्य था।

सरकार का एक धार्मिक कार्य भी है। यही कारण है कि कैल्विन को जिनेवा वापस लाया गया: ताकि सरकार को अपने धार्मिक कार्य को निपटाने में मदद मिल सके। लेकिन अपने धार्मिक कार्य में, सरकार को चर्च की रक्षा करनी होती है और यह सुनिश्चित करना होता है कि ईशानिदा या अपवित्रता, अपवित्रता या इस तरह की चीज़ों से चर्च का उल्लंघन न हो।

चर्च को बनाए रखना इसका काम है। कैल्विन के अनुसार, यह इतना आगे बढ़ गया है कि चर्च का सार्वजनिक ढांचा स्थापित करना है। ठीक है, और आप चर्च का सार्वजनिक ढांचा कैसे

स्थापित करते हैं? आप कर एकत्र करके, इमारतें बनाकर और मंत्रियों को नियुक्त करके ऐसा करते हैं।

तो, और, आप जानते हैं, यूरोप के कई देश, यूरोप में ऐसे देश हैं जो अभी भी सार्वजनिक चर्चों का समर्थन करने, चर्च बनाने, मंत्रियों को नियुक्त करने आदि के लिए कर एकत्र करते हैं। इसलिए यह सार्वजनिक कार्य बहुत महत्वपूर्ण है। हम अमेरिका में ऐसा नहीं करते हैं क्योंकि हमारे यहाँ कई कारणों से चर्च और राज्य का पृथक्करण है।

लेकिन हमारे यहाँ चर्च और राज्य का विभाजन है, इसलिए हम अमेरिका में चर्च नहीं बनाते और पादरी नियुक्त नहीं करते और पादरी को वेतन नहीं देते। लेकिन उस दुनिया में, केल्विन को लगा कि यही महत्वपूर्ण था और यह बात आधुनिक दुनिया में भी लागू है। यूरोप में अभी भी ऐसे देश हैं जो चर्च बनाने और पादरी को वेतन देने के लिए कर वसूलते हैं।

अब, हम अपनी संस्कृति में ऐसा नहीं सोचते, लेकिन पश्चिमी यूरोप में कुछ जगहों पर यह अभी भी सच है। ठीक है, तो जहाँ तक उसका सवाल है, ये दो समारोह थे। ठीक है, आपको सोमवार को पाँच सेकंड का ब्रेक चाहिए।

सोमवार की सुबह, अपने दिलों को आशीर्वाद दें। हम यह कर सकते हैं, हालांकि। क्या आप में से किसी की सोमवार की सुबह 8 बजे की क्लास है? हाँ, रूथ, अपने दिलों को आशीर्वाद दें... देखिए, क्या यह अच्छा नहीं है? आपके पास 8 बजे की क्लास है, 9, 10 बजे की क्लास है।

जब तक आप चैपल जाते हैं, तब तक आपकी दो क्लास हो चुकी होती हैं। आप इस बात का आनंद ले रहे होते हैं। लेकिन हाँ, हमें बहुत अच्छा लगता है... क्या किसी और की 8 बजे की क्लास है? कोई है? नहीं? आप लोगों, 8 बजे की क्लास नहीं है? ठीक है।

आप यहाँ प्रथम श्रेणी में हैं? ठीक है, ठीक है। स्ट्रेच करने, आराम करने और स्ट्रेच करने के लिए पाँच सेकंड दें। क्या हम अपने आराम के समय को टेप कर रहे हैं, टेड, या हम उन्हें काम करने में सक्षम हैं? हम उन्हें काम करने के लिए ठीक हैं।

धन्यवाद। मैं इसकी सराहना करता हूँ। यह समझाना कठिन है कि मैं लोगों, छात्रों को आराम करने का समय देता हूँ।

ठीक है, तो क्या आप ठीक हैं? ठीक है। अब, मानव जाति के राज्य के बारे में एक और बात। वहाँ बहुत सारे लोग थे जिन्हें वह नागरिक अधिकारी कहते थे।

मजिस्ट्रेट, राजकुमार, न्यायाधीश, कानून के अधिकारी, इत्यादि थे। लेकिन केल्विन के दिनों में बहुत सारे नागरिक अधिकारी थे। अब, ये निर्वाचित अधिकारी नहीं थे, बेशक।

यह वह लोकतंत्र नहीं है जिसमें वह रह रहे हैं, न ही हम लोकतंत्र से परिचित हैं। इसलिए, आप राजकुमारों का चुनाव नहीं कर रहे हैं। वे इस तथ्य के कारण राजकुमार हैं कि वे परिवारों में पैदा हुए हैं।

और ये अन्य पद, आप जानते हैं, मजिस्ट्रेट और अन्य लोगों को दिए जाते हैं। लेकिन यहाँ कुछ ऐसा है जो मुझे लगता है कि हम सीख सकते हैं। उन्हें लगा कि कैल्विन को लगा कि आपको ऐसा करना चाहिए; उन्हें लगा कि इन लोगों का दर्जा बहुत ऊँचा है।

और कैल्विन ने महसूस किया कि आपको वास्तव में इन लोगों का सम्मान करना चाहिए। आपको नागरिक अधिकारियों का सम्मान करना चाहिए। और जब भी संभव हो, आपको यह पहचानना चाहिए कि ये लोग ईश्वर की कृपा से काम कर रहे हैं।

ये लोग ईश्वर की कृपा से वहाँ हैं। ईश्वर ने उन्हें वहाँ रखा है। और उन्होंने उन्हें वहाँ उन कामों को करने के लिए रखा है जिनके बारे में हमने बात की है, सार्वजनिक व्यवस्था बनाए रखना और धार्मिक कार्य और जिम्मेदारियाँ निभाना।

और अगर संयोग से, अगर संयोग से आप खुद को एक नागरिक प्राधिकरण के अधीन पाते हैं, जो कि, भगवान, आपका भला करे, वह वह नहीं करता जो उसे करना चाहिए, तो कैल्विन कहते हैं कि आपको आज्ञा का पालन करना होगा, और आपको कष्ट सहना होगा। इसलिए यदि आप एक नागरिक प्राधिकरण के अधीन हैं जो बहुत ही मतलबी है, शायद या ऐसा ही कुछ, तो आपको अभी भी उस प्राधिकरण का पालन करना होगा, और आपको अभी भी उस प्राधिकरण के तहत कष्ट सहना होगा। सीखने के लिए सबक हैं।

अब कैल्विन के पास इंस्टीट्यूट्स को खत्म करने का एक अजीब तरीका है क्योंकि इंस्टीट्यूट्स के अंत में वह कहता है, एवेंजर्स आएं और उस व्यक्ति का ख्याल रखेंगे। लेकिन मुझे नहीं पता कि उसका क्या मतलब है। तो, ठीक है।

तो, लेकिन वह राजनेताओं को जो स्थान देता है, अगर आप उस शब्द का उपयोग करना चाहते हैं, तो वह उन्हें बहुत ऊँचा दर्जा देता है क्योंकि वे भगवान की कृपा से वहाँ हैं। अब, मैं राजनेताओं को जो स्थान देता हूँ, उसके बारे में थोड़ा चिंतित हूँ क्योंकि क्या हम अक्सर राजनेताओं और सार्वजनिक सेवा में लोगों को कमतर आंकने की प्रवृत्ति नहीं रखते हैं? क्या हम ऐसा नहीं करते हैं? क्या यहां कोई राजनीतिक अध्ययन प्रमुख है, संयोग से? खैर, क्या हम उन्हें कमतर आंकने और उनका मजाक उड़ाने और उन्हें नीचा दिखाने की प्रवृत्ति नहीं रखते हैं, सार्वजनिक सेवा में उन लोगों को? खैर, कैल्विन का इससे कोई लेना-देना नहीं है। कैल्विन को लगा कि वे भगवान की कृपा से वहाँ हैं, और इसलिए आपको उन्हें बहुत उच्च सम्मान देना चाहिए।

लेकिन हमारे समय में, हमारे युग में, मुझे लगता है कि यह थोड़ा अलग है। वैसे भी, मुझे लगता है कि शायद हम कैल्विन से थोड़ा सीख सकते हैं। ठीक है, यहाँ इस बारे में कुछ और बातें हैं।

कैल्विन ने न्यायपूर्ण युद्धों की अनुमति दी थी। उन्होंने न्यायपूर्ण युद्धों की अनुमति दी थी। वह यहाँ एक अच्छे ऑगस्टीनियन हैं।

वह ऑगस्टीन और लूथर की तरह विश्वास करता है। वह सरकार को हिंसक होने की अनुमति देता है। वह न्यायपूर्ण युद्ध की अनुमति देता है, अगर इसका मतलब है कि सार्वजनिक व्यवस्था बनाए रखने के लिए यही करना होगा।

तो, कैल्विन शांतिवादी नहीं थे। उस दिन कुछ और लोग भी थे जो शांतिवादी थे, लेकिन कैल्विन शांतिवादी नहीं थे। ठीक है, और फिर एक आखिरी बात जो हम नागरिक सरकार, नागरिक सरकार से अपने रिश्ते के बारे में बताएंगे।

अगर नागरिक सरकार और ईश्वर के कानून के बीच कोई चुनाव करना होता, और शुरुआती ईसाइयों को वह चुनाव करना होता, अगर ऐसा कोई चुनाव करना होता, तो आप हमेशा ईश्वर के कानून का पालन करते। इसलिए, अगर संयोग से कोई चुनाव होता है, तो आप हमेशा ईश्वर के कानून का पालन करते हैं, और फिर आपको ईश्वर के कानून का पालन करने के लिए कष्ट सहने के लिए तैयार रहना चाहिए। लेकिन यह कोई चुनाव नहीं है।

अगर वे आप पर कोई विकल्प थोप रहे हैं, तो आपके पास कोई विकल्प नहीं है। आप हमेशा ईश्वर के कानून का पालन करते हैं। अगर आपको लगता है कि आप नागरिक कानून का पालन नहीं कर सकते, तो यह हमेशा नागरिक कानून से ज़्यादा अहमियत रखता है।

तो, दोनों राज्य ईश्वर की कृपा से दोनों राज्यों में रहते हैं। हम स्वर्ग के राज्य में रहते हैं। चर्च कैल्विन के लिए इसकी गवाही दे रहा है, लेकिन हम इस रोज़मर्रा की दुनिया में भी रहते हैं, और हमें इस रोज़मर्रा की दुनिया में अच्छे नागरिकों के रूप में कार्य करना चाहिए और यह पहचानना चाहिए कि ये सभी चीज़ें ईश्वर की कृपा से होती हैं।

ठीक है, तो यह दो राज्यों का सिद्धांत है। आइए देखें कि क्या हम यहां कुछ मिनटों के लिए जॉन कैल्विन के बारे में बात कर सकते हैं और फिर हम अगले व्याख्यान पर जाएंगे। कैल्विन के जीवन, कैल्विन के काम, कैल्विन के धर्मशास्त्र, इन सभी चीज़ों के बारे में कुछ भी जो हमने जॉन कैल्विन के साथ बात की है? वह मध्ययुगीन रोमन कैथोलिक चर्च का जवाब देने की कोशिश कर रहा है।

वह सुधार के प्रति वफादार होने की कोशिश कर रहा है क्योंकि इसकी शुरुआत लूथर जैसे लोगों ने की थी। वह अक्सर सुधार के दौरान आने वाले तर्कों में बीच का रास्ता अपनाने की कोशिश करता है। लेकिन क्या कैल्विन के बारे में अभी भी आपके लिए कोई रहस्य है? आप इन सब पर विश्वास करते हैं? आप कैल्विन ने जो सिखाया, उस पर विश्वास करते हैं? तो, क्या ये सिद्धांत मुख्य हैं? इस कोर्स के लिए, अगर हमारे पास कैल्विन पर एक पूरा कोर्स होता, तो हम स्पष्ट रूप से इन पर गहराई से जा पाते।

लेकिन इस कोर्स के लिए, मैं उन लोगों को चुनने की कोशिश करता हूँ जो वास्तव में उनके समय से बात करते हैं। और इसलिए मुझे लगता है कि ये उनके प्रमुख सिद्धांत हैं, लेकिन वे उनके समय से भी बात करते हैं, रोमन कैथोलिक चर्च को जवाब देते हैं, और इसी तरह। इसलिए मैंने इन्हें विशेष रूप से चुना है।

यह उनके सभी सिद्धांतों को नहीं बताता, लेकिन यह आपको उनके प्रमुख सिद्धांतों की मुख्य बातें बताता है। और आप जिस पाठ्यपुस्तक का उपयोग कर रहे हैं, वह भी यही करती है। यहाँ कुछ भी... संस्थानों में इनमें से प्रत्येक पर चर्चा करने के लिए वह बहुत समय लेते हैं।

लेकिन और कुछ भी, केल्विन? नहीं? हम शुक्रवार को नाश्ते पर ज़रूर उसके बारे में और बात करेंगे। जॉन केल्विन। ठीक है।

खैर, अगर कुछ भी दिमाग में आए, तो हमें बताएं। हम लेक्चर नंबर तीन पर आने वाले हैं। कम से कम हम इसे शुरू तो कर पाएंगे।

व्याख्यान तीन। और यह व्याख्यान रोमन कैथोलिक चर्च की रिफॉर्मेशन के प्रति प्रतिक्रिया है। रोमन कैथोलिक चर्च की रिफॉर्मेशन के प्रति प्रतिक्रिया।

मुझे पावरपॉइंट बदलने की ज़रूरत है। रोमन कैथोलिक चर्च की रिफॉर्मेशन के प्रति इस प्रतिक्रिया को अक्सर काउंटर-रिफॉर्मेशन या कैथोलिक रिफॉर्मेशन कहा जाता है। तो ये दोनों चीज़ें समानार्थी हैं।

इसे काउंटर-रिफॉर्मेशन या कैथोलिक रिफॉर्मेशन कहा जाता है। ठीक है? अब, अगर आप यहाँ अपनी रूपरेखा को जल्दी से देखें, तो मैं इसके साथ तीन चीज़ें करने जा रहा हूँ। मैं सिर्फ इनक्विजिशन का उल्लेख करने जा रहा हूँ।

मैं सोसाइटी ऑफ जीसस के जेसुइट्स का उल्लेख करने जा रहा हूँ। और तीसरा, मैं ट्रेंट की परिषद का उल्लेख करने जा रहा हूँ, ताकि यह देखा जा सके कि रोमन कैथोलिक चर्च ने सुधार के प्रति कैसी प्रतिक्रिया व्यक्त की। ठीक है।

तो मैंने इन तीन चीज़ों को क्यों चुना? और मैं इन तीन चीज़ों को कैसे मैनेज करने जा रहा हूँ? इन तीन चीज़ों के साथ मैं जो कर रहा हूँ, वह रोमन कैथोलिक धर्म द्वारा सुधार के प्रति अधिक सहज प्रतिक्रिया से, इनक्विजिशन, सोसाइटी ऑफ जीसस की स्थापना के साथ थोड़ी अधिक संतुलित प्रतिक्रिया की ओर, और अधिक संतुलित प्रतिक्रिया, ट्रेंट की परिषद की ओर बढ़ रहा है, जिसमें 18 साल लगे। तो, क्या यह समझ में आता है? हम प्रोटेस्टेंट को मारने जैसी सहज प्रतिक्रिया से अधिक प्रबंधनीय, सोसाइटी ऑफ जीसस की ओर बढ़ रहे हैं, 18 साल तक अधिक स्थिर रहने की ओर, ताकि यह पता लगाया जा सके कि हम सुधार के प्रति कैसे प्रतिक्रिया करने जा रहे हैं। तो हम इसी तरह आगे बढ़ रहे हैं।

तो, हम क्या करेंगे, हम सबसे पहले इनक्विजिशन को लेंगे। ठीक है, इनक्विजिशन। आइए सबसे पहले इनक्विजिशन की परिभाषा दें।

इनक्विजिशन एक न्यायाधिकरण है जिसे पोप ने विधर्म से निपटने के लिए स्थापित किया है। तो यही इनक्विजिशन की परिभाषा है। विधर्म से निपटने के लिए पोप ने एक न्यायाधिकरण की स्थापना की थी।

हम इन्क्विजिशन का वर्णन इसी तरह करेंगे। ठीक है, अब, यह ग्रेगरी IX था, और ये वो समय है जब उसने शासन किया, या यह पोप था 1227 से 1241 तक। यह ग्रेगरी IX ही था जिसने इन्क्विजिशन कमीशन की स्थापना की।

ठीक है, अब, अगर आप उन तारीखों को देखें, तो वह उस समय की बात है जब वह पोप थे। अगर आप उन तारीखों को एक मिनट के लिए देखें, तो आप कहेंगे, एक मिनट रुकिए, यह सुधार से कुछ सौ साल पहले की बात है। सुधार होने से पहले जांच आयोग के साथ यहाँ क्या चल रहा था? खैर, वास्तव में, सुधार से पहले की बात चल रही थी।

सुधार की शुरुआत मार्टिन लूथर से नहीं हुई थी। इसकी शुरुआत कैल्विन से नहीं हुई थी। सुधार से पहले की प्रक्रिया चल रही थी, और रोमन कैथोलिक चर्च में बहुत सी ऐसी चीजें हो रही थीं जिनसे पोप बहुत नाखुश थे क्योंकि उन्हें लगा कि इससे रोमन कैथोलिक चर्च को चुनौती मिल रही है।

इसलिए, ग्रेगरी IX ने फैसला किया कि मैं इन्क्विजिशन का एक आयोग स्थापित करने जा रहा हूँ और उन्हें विधर्म से निपटने के लिए स्थापित करूँगा। तो आपके पास पहले से ही विधर्म है, या मुझे कहना चाहिए, आपके पास पहले से ही वह है जिसे वह विधर्म मानता था। इसलिए आयोग उस समय से पहले का है जिसके बारे में हम बात कर रहे हैं, सुधार से पहले का।

ठीक है। ठीक है। अब, मैं आपको उनकी विधि बताता हूँ, वह विधि जो इन लोगों ने तब अपनाई थी जब वे यह पता लगाने की कोशिश कर रहे थे कि शहर में विधर्म हैं या नहीं।

आयोग की जांच का तरीका यह था। इसके तीन भाग थे, या इसके तीन पहलू थे। इसलिए, जांच आयोग आपके शहर में आएगा।

ठीक है। सबसे पहले वे सभी नगरवासियों को एक साथ बुलाएँगे। एक तरह की गंभीर सभा होगी जिसमें सभी को एक साथ बुलाया जाएगा।

ठीक है। और उस गंभीर सभा में, वे एक तरह से कहेंगे, हम जानते हैं कि इस शहर में विधर्म हैं। इसलिए, हम आपको यह स्वीकार करने के लिए समय देने जा रहे हैं कि आप विधर्म हैं।

और अगर आप अभी, यहीं, अभी यह कबूल करते हैं, तो आपकी सज़ा हल्की होगी। तो इसमें कुछ हफ़्ते, दो, तीन, चार हफ़्ते लगे। लेकिन यह जांच आयोग का पहला कदम है।

और इसने जो किया, ज़ाहिर है, इसने शहर के हर व्यक्ति के दिल में डर पैदा करना शुरू कर दिया, आप जानते हैं। तो, ठीक है। ठीक है।

फिर, दूसरा कदम। दूसरा कदम यह था कि उस अवधि के अंत में, पूरे शहर में एक व्यवस्थित खोज करें और उन लोगों से निपटने की कोशिश करें जिन्हें आप विधर्म मानते हैं। ठीक है।

और यह कुछ समय बाद हुआ। हम इसके लिए ग्रेगरी IX को दोषी नहीं ठहरा सकते क्योंकि यह 1252 तक नहीं हुआ था। लेकिन 1252 में, यातना की अनुमति दी गई थी।

तो, जब आप शहर से गुज़रते हैं और यह पता लगाने की कोशिश करते हैं कि ये विधर्मी कौन हैं, तो रोमन कैथोलिक चर्च द्वारा यातना की अनुमति दी गई थी। आप वास्तव में लोगों को यातना देकर उनसे यह कबूल करवा सकते हैं कि वे विधर्मी हैं। तो यह दूसरा कदम है।

और फिर आपको बस दो गवाहों की ज़रूरत है कि यह व्यक्ति विधर्मी है, और यह उस व्यक्ति को दोषी ठहराने के लिए पर्याप्त है। तो यह दूसरा चरण है, वास्तव में पता लगाएँ कि शहर में विधर्मी कौन हैं। तो, ठीक है।

तो यह दूसरा कदम है। ठीक है। अब तीसरा कदम है विधर्मियों को राज्य को सौंपना।

क्या चर्च विधर्मियों को सूली पर जला देगा? नहीं, यह चर्च का काम नहीं है। विधर्मियों को सूली पर जलाना राज्य का काम है क्योंकि राज्य का काम सार्वजनिक जीवन की रक्षा करना है और विधर्मी सार्वजनिक जीवन के लिए खतरा हैं। इसलिए आप विधर्मियों को राज्य के अधिकारियों को सौंप देते हैं और राज्य के अधिकारी दो में से एक काम करेंगे।

या तो वे उन्हें सूली पर जला देते, जैसा कि हमने देखा कि कुछ सौ साल बाद जिनेवा में सर्वेटस को सूली पर जला दिया गया, या फिर उन्हें विधर्मी घोषित कर दिया जाता, लेकिन उन्हें अन्य प्रकार की सज़ाएँ दी जातीं, जैसे कि पिटाई और इसी तरह की अन्य सज़ाएँ, सार्वजनिक रूप से पिटाई। तो दो चीज़ें हैं, ऐसा करने के दो तरीके हैं। लेकिन यही इनक्विजिशन का तरीका बन गया।

ठीक है, तो यह बहुत, बहुत महत्वपूर्ण हो गया। ठीक है, अब मैं बस यह बताना चाहता हूँ कि मेरे पास शायद क्लेमेंट VII के आने का समय नहीं होगा, और ये वो तारीखें हैं जब क्लेमेंट VII पोप थे। बस मैं क्लेमेंट VII का ज़िक्र करना चाहता हूँ, और फिर मैं कुछ घोषणाएँ करने जा रहा हूँ, लेकिन क्लेमेंट VII आ गए।

ग्रेगरी IX से उनकी तारीखों की तुलना पर ध्यान दें। हम दो सौ साल बाद की बात कर रहे हैं, लगभग 300 साल बाद। हुआ यह कि क्लेमेंट VII आया, और इनक्विजिशन खत्म हो गया।

इन 300 सालों में इनक्विजिशन खत्म हो चुका था। लेकिन ध्यान दें कि जब क्लेमेंट VII आया, तो वह रिफॉर्मेशन के समय आया। इसलिए, क्लेमेंट VII ने फिर इनक्विजिशन को फिर से शुरू किया।

वह इनक्विजिशन को फिर से जीवित कर देता है। और हम बुधवार को इस बारे में बात करने जा रहे हैं। धन्यवाद।

यह डॉ. रोजर ग्रीन अपने चर्च इतिहास पाठ्यक्रम, रिफॉर्मेशन टू द प्रेजेंट में हैं। यह कैल्विन के धर्मशास्त्र पर सत्र 6 है।

